classmate
Date 14/07/20
Page 1

Subject - Philosophy
Class - B.A, Part-III (Hons)
Paper - V

धार्मिक चेतना (दूसरा भाग)
Religious Consciousness (Second Part)

क्या धर्म का आधार केवल भावना है? (Is religion a matter of feeling only?)

कुछ विद्वानों ने धर्म का मुख्य अंग भावना को कहा है।

इस मत को शिलियरमेकर (Schleiermacher) टायलर (Tylor), मैक्टागार्ट (Mc Taggart) इत्यादि विद्वानों ने अपनाया है। इस विचार की पुष्टि के लिए कुछ तर्क दिये जाते हैं, जिन्हें भावात्मक पहलू के पक्ष में तर्क (Arguments in favour of Affective Element) कहा जाता है। शिलियरमेकर ने धर्म की व्याख्या करते हुए कहा है, 'धर्म पूर्ण निर्भरता की भावना है'। (Religion is a feeling of absolute dependance) धर्म में व्यक्ति ईश्वर के प्रति

निर्भरता की भावना रखता है। भावात्मक पक्ष की महत्ता का उल्लेख करते हुए सैक्टागार्ट ने कहा है "भय मिश्रित श्रद्धा ही मौलिक धार्मिक भावना को प्रकट करने में सफल है।" अब इस विचार की पुष्टि हेतु मुख्य युक्तियों का विवेचन हम करेंगे।

(1) इस पक्ष का आधार सार्वजनिक विश्वास है। धर्म के प्रति भावना रखने के कारण ही मानव धार्मिक हो जाता है। जिस प्रकार वस्त्र, भोजन एवं घर की आवश्यकता हमें महसूस होती है, उसी प्रकार हम धर्म की भी आवश्यकता महसूस करते हैं।

(2) धर्म कोई तर्क या व्यावहारिक वस्तु नहीं है। ईश्वर के प्रति स्नेह और भावना का प्रदर्शन ही धर्म है। इस बात की पुष्टि विश्व की ओर ध्यान देने से हो जाती है। भावना ज्ञान से उच्च प्रतीत होती है। धर्म विश्वास (faith) पर आधारित है, जिसका

स्त्रोत स्नेह है। अतः धर्म के लिए भावना ही प्रधान तत्व है।

(3) धर्म का उद्देश्य साधक और ईश्वर के साथ तादात्मय - संबंध उपस्थित करना है। जब हम किसी वस्तु को जानने का प्रयास करते है, तब वस्तु और हममें पार्थक्य की दीवार खड़ी होती है। भावना द्वारा ही इस विरोध का खंडण होता है। अतः भावना ज्ञान से उच्च प्रतीत होती है।

(4) विश्व में अनेकों ऐसे धर्म है, जहाँ मूर्ति - पूजा की परिपाटी है। मानव पत्थर-मूर्ति को ईश्वर का प्रतिरूप समझता है। बुद्धि पत्थर जैसे निर्जीव और ठोस पदार्थ पर आत्म - समर्पण, श्रद्धा, प्रेम आदि भावनाओं को प्रदर्शित करने को तत्पर नहीं रहती है। परंतु यह भावना का ही चमत्कार है जिससे फलस्वरूप पत्थर को भी ईश्वर का प्रतीक समझकर साधक धार्मिकता का परिचय देता है।

(5) धार्मिक व्यक्ति के लिए भावना का रहना आवश्यक है। भावना के अभाव में धार्मिकता की व्याख्या करना असंभव है। धर्म में भिन्न-भिन्न क्रियाओं के द्वारा ईश्वर को प्रसन्न रखने का प्रयास करता है। भावना ही क्रियाओं का मूल्य निश्चित करती है। इन युक्तिओं से सिद्ध होता है कि धर्म का सर्वस्व भावना है। भावना ही धर्म को जीवनदाता करती है। भावना धार्मिक चेतना का मुख्य अंग है।

महात्मा गाँधी ने भी इस विचार का समर्थ करते हुए स्पष्ट रूप से कहा है - 'धर्म मस्तिष्क की उपज न होकर हृदय की समझ है।

धर्म का एक मात्र आधार भावना को ठहराना, एकांगी विचार प्रतीत होता है। धर्म का मुख्य अंग भावना है। परंतु इससे यह निष्कर्ष निकालना कि भावना ही एक

मात्र आधार है गलत है। इसलिए आलोचकों ने उस मत का खंडण किया है। आलोचकों के तर्क को भावना के विरुद्ध तर्क (Arguments against affective element) कहा जाता है।

(1) यदि धर्म का पहलू सिर्फ भावना को ही माना जाए, तो धर्म का आधार कमजोर और असंगत हो जाता है।

(2) भावना पर आधारित धर्म अंधा, विवेकहीन और रुढ़िवादी हो जाता है। भावना का विचार तभी हो सकता है, जब इसकी जड़ विवेक में हो।

(3) भावना निरंतर परिवर्तनशील तथा चंचल होती है। भावना व्यक्तिगत होती है। हमारी भावना आपकी भावना से भिन्न है। यदि धर्म का आधार भावना को मान लिया जाए तो धर्म की स्थिरता की रक्षा नहीं हो सकती है।

(4) यह मनोवैज्ञानिक सत्य है कि भावना की स्थिति निरपेक्ष नहीं हो सकती। भावना का आधार ज्ञान होना चाहिए। भावना के लिए प्रत्यक्ष आवश्यक है। अतः भावना को ज्ञान से निरपेक्ष कहना गलत है। इससे सिद्ध होता है कि धर्म का आधार सिर्फ भावना को नहीं ठहराया जा सकता है।

शेष अगले भाग में

Dr. Md. Arshad Ali
Deptt. of Philosophy
Jagjiwan College,
V.K.S.U, Ara.